जल वंदन
Glories of Water

MISEREOR IHR HILFSWERK

cecoedecon

प्रकाशन वर्ष	:	मार्च 2021
Year of Publication	:	March 2021
प्रकाशक	:	सिकोईडिकोन
		एफ–159/160, सीतापुरा
		औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर–302022
Published by	:	CECEODECON
		F-159/160, Sitapura
		Industrial Area, Jaipur-302022
फोन/Phone	:	91-141-2771488
ई–मेल/E-mail	:	cecoedecon@gmail.com
Website	:	www.ceceodecon.org.in

जल वंदन

सिकोईडिकोन संस्था की पिछले 40 वर्षों की विकास यात्रा में 'जल' और 'जन' को केंद्र में रखा गया है। 1981 में जयपुर और उसके आस–पास के क्षेत्रों में आई प्रलयंकारी बाढ़ ने जल प्रबंधन की सीख दी।

'जन' की संवेदनशीलता ही जल प्रबंधन का सबसे जरूरी घटक है। इस हेतु संस्था ने आरंभ से ही सामुदायिक संगठनों का ताना–बाना इस प्रकार बुना कि संस्था और इन संगठनों के गठजोड़ से सैंकड़ों जल संरक्षण के ढ़ांचे तैयार हुए जिनमें एनिकट, गली प्लग और छोटे तालाब प्रमुखता से शामिल हैं। पाँच सौ से अधिक जन संगठनों की सूझबूझ और श्रम के साथ सिकोईडिकोन के प्रबंधन व क्षमतावर्धन से जल संरक्षण का कार्य लगातार चल रहा है। जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौती का सामना करने में जल की बूंद–बूंद को सहेजने पर दुनियाभर की सरकारें जोर दे रही है। किंतु यह कार्य तभी संभव है जब 'जल' और 'जन' के बीच आत्मीय मेल हो।

'जल वंदन' एक लघु जल चित्र संग्रह है जो जन समुदाय और सिकोईडिकोन के जल संरक्षण के प्रयासों को बयां करता है।

नोट : प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए प्रकाशक का संदर्भ देते हुए किया जा सकता है

JAL VANDAN- Glories of Water

In its almost four decade long history, CECOEDECON's development journey features “water” and “community” as the foundation blocks. The impacts of the 1981 devastating floods which affected Jaipur and surrounding areas highlighted critical gaps in water management while also emphasizing the need to create awareness among the community to enhance their meaningful participation in the management of water resources. Based on these insights, CECOEDECON chanellized energies towards building strong community based institutions from its very inception. The organization has since continued to strengthen these CBOs to ensure a close knit network at the grassroots whose collective efforts have helped in the creation of hundreds of water conservation structures ranging from Anicuts (small dams), Gully plugs and small ponds. Combining the strength of over 500 community based groups with the capacity building and technical inputs from CECOEDECON, has ensured continued and sustained efforts towards water conservation. The importance of conserving every drop of water to counter the challenges of the climate crisis is being recognized and prioritized globally. But this will only be possible by reviving the harmony between “water” and “community”.

"JAL VANDAN- Glories of Water" is a small pictorial showcase of efforts made by CECOEDECON & local communities towards water conservation.

झराना एनिकट

जयपुर जिले की फागी तहसील के झराना गांव में निर्मित इस एनिकट का निर्माण वर्ष 1998 में हुआ। एनिकट निर्माण से आसपास के क्षेत्र की 6 गाँवों की भूमि की उर्वरकता तो बढ़ी ही है साथ ही सिंचाई में भी किसानों को लाभ हुआ है। झराना एनिकट का निर्माण जन सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा इन्टीग्रेटेड वाटर रिसॉर्सेज डेवलपमेंट प्रोग्राम इन राजस्थान परियोजना के तहत किया गया।

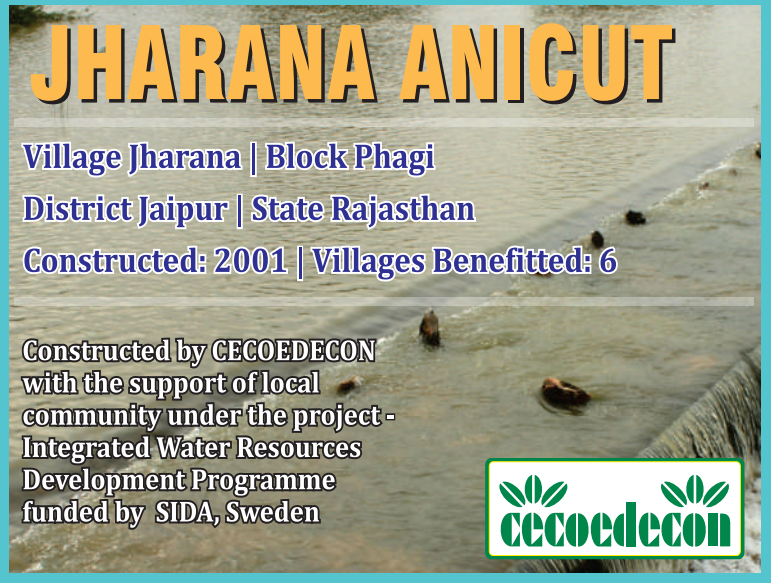

अणदपुरा एनिकट

टोंक जिले की निवाई तहसील के अणदपुरा गांव में निर्मित इस एनिकट का निर्माण वर्ष 2002 में हुआ। एनिकट निर्माण से आसपास के क्षेत्र की भूमि की उर्वरकता तो बढ़ी ही है साथ ही सिंचाई में भी किसानों को लाभ हुआ है। अणदपुरा एनिकट का निर्माण जन सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा पार्टिसिपेटरी इनीशिएटिव्ज़ फॉर इन्टीग्रेटेड रूरल डवलपमेंट परियोजना के तहत किया गया।

आनासागर एनिकट

आनासागर एनिकट का निर्माण वर्ष 2002 में बांरा जिले की शाहबाद तहसील के आनासागर गांव में किया गया। सिकोईडिकोन द्वारा इस एनिकट का निर्माण जनभागीदारी से इमरजेंसी रीलिफ टू ड्राउट अफेक्टेड पीपल परियोजना के तहत किया गया।

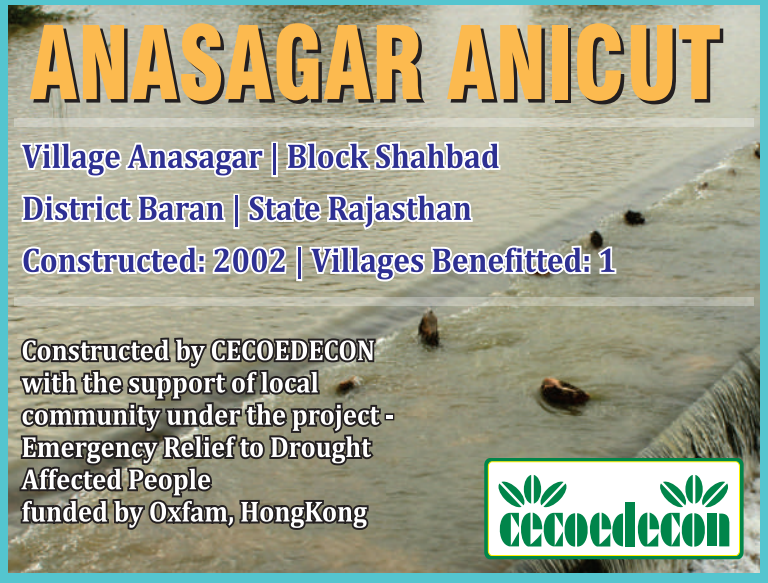

सिकोईडिकोन संस्था
ग्राम विकास समिति, बापूगांव
एवं
विधायक निधि कोष
द्वारा निर्मित
STARTED

बापूगांव एनिकट

जयपुर जिले की चाकसू तहसील के बापूगांव में स्थित इस एनिकट का निर्माण वर्ष 2000 में हुआ। इस एनिकट के निर्माण से बापूगांव सहित आसपास के 6 गांवों के ग्रामीणजन लाभान्वित हो रहे हैं। बापूगांव एनिकट का निर्माण सिकोईडिकोन और जनसमुदाय के सहयोग से ''पीपुल्स इनीशिएटिव फॉर लैंड केयर एण्ड सस्टेनेबल डवलमेंट इन राजस्थान'' परियोजना के तहत किया गया।

बीची नादिया एनिकट

बीची नादिया एनिकट का निर्माण बांरा जिले की शाहबाद तहसील के बीची नादिया गांव में किया गया। इस एनिकट का निर्माण सिकोईडिकोन व जन समुदाय के सहयोग से पार्टीसिपेटरी इनीशिएटिव्ज फॉर इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंट परियोजना के तहत किया गया। वर्तमान में इस एनिकट निर्माण से 2 गाँवों की सैंकड़ो हेक्टेयर कृषि भूमि सिंचित हो रही है।

दादनपुरा एनिकट

जयपुर जिले की चाकसू तहसील के दादनपुरा गांव में बने इस एनिकट से आसपास के तीन गांव लाभान्वित हो रहे हैं, जिसमें प्रमुख रूप से खेती के लिए सिंचाई एवं पशुओं को पेयजल की उपलब्धता में इस एनिकट की महत्वपूर्ण भूमिका है। दादनपुरा एनिकट का निर्माण सिकोईडिकोन द्वारा जन सहयोग से सॉयल एण्ड वाटर कन्जर्वेशन प्रोग्राम के तहत किया गया।

डूंसरी एनिकट

अपने आस–पास के 7 गांवों में खेती और पशुपालन को सीधे से लाभ पहुँचाने वाले डूंसरी एनिकट का निर्माण वर्ष 1995 में जयपुर जिले की चाकसू तहसील के डूंसरी गांव में हुआ। इस एनिकट का निर्माण जन समुदाय की भागीदारी से कपार्ट के सहयोग से किया गया।

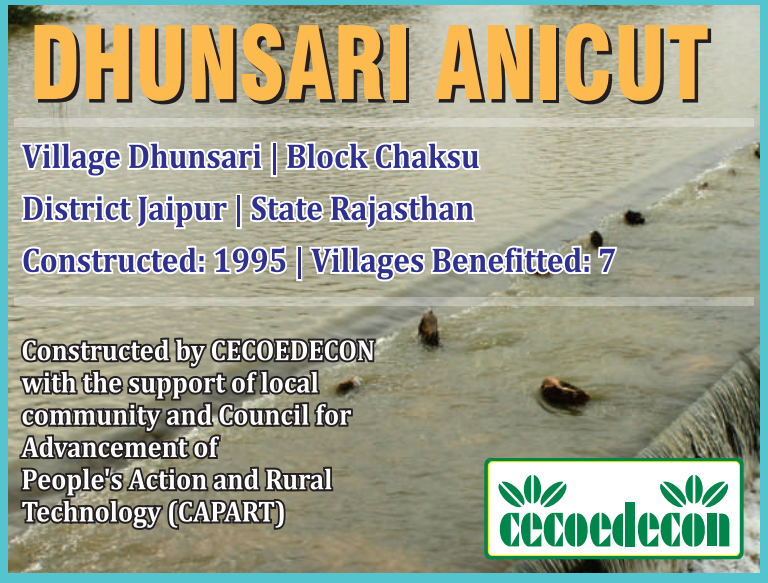

गोवर्धनपुरा एनिकट

बारां जिले की शाहबाद तहसील के गोवर्धनपुरा गांव में बने इस एनिकट से आस–पास के दो गांव सीधे तौर पर लाभान्वित हो रहे हैं। एनिकट निर्माण से कृषि भूमि उपजाऊ हुई और उत्पादन में दोगुना तक वृद्धि हुई है। गोवर्धनपुरा एनिकट का निर्माण जन समुदाय के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा इन्टीग्रेटेड वाटर रिसोर्सेस डवलपमेंट प्रोग्राम के तहत किया गया।

मण्डोर एनिकट

वर्ष 1995 में जयपुर जिले की फागी तहसील के मण्डोर गांव में निर्मित इस एनिकट से आस–पास के 9 गांवों को कृषि व पशुपालन में लाभ मिल रहा है। इस एनिकट निर्माण से स्थानीय लोगों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति बेहतर हुई है। मण्डोर एनिकट का निर्माण स्थानीय जनसमुदाय के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा सस्टेनेबल एग्रो डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत किया गया।

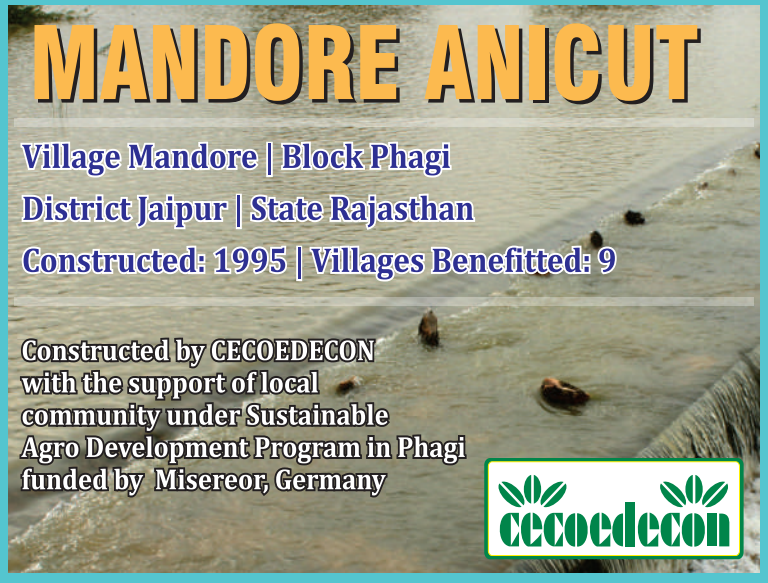

मोरला एनिकट

टोंक जिले की मालपुरा तहसील के मोरला गांव में वर्ष 2003 में मोरला एनिकट का निर्माण हुआ। एनिकट निर्माण से स्थानीय ग्रामवासी लाभान्वित हो रहे है। जनभागीदारी से बने इस एनिकट का निर्माण पार्टिसिपेटरी इनीशिएटिव्ज़ फॉर इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंट परियोजना के तहत किया गया।

पुरमपुर एनिकट

पुरमपुर एनिकट का निर्माण बांरा जिले की शाहबाद तहसील के पुरमपुर गांव में हुआ। एनिकट निर्माण से आस–पास के 2 गाँवों की भूमि के जलस्तर में बढ़ोतरी हुई एवं कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। इस एनिकट का निर्माण जनसहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा इन्टीग्रेटेड वाटर रिसोर्स डवलपमेंट प्रोग्राम के अन्तर्गत किया गया।

सनवाड़ा एनिकट

बारां जिले की शाहबाद तहसील के सनवाड़ा गांव में निर्मित इस एनिकट से स्थानीय ग्रामवासियों के कृषि उत्पादन में निरन्तर फायदा हो रहा है। इस एनिकट का निर्माण सिकोईडिकोन द्वारा स्थानीय जन समुदाय के सहयोग से किया गया।

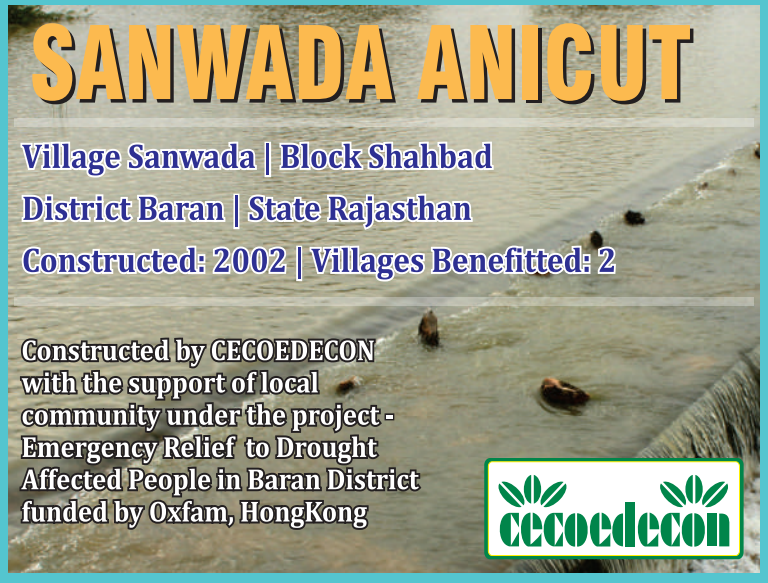

त्रिलोकपुरा एनिकट

त्रिलोकपुरा एनिकट का निर्माण जयपुर जिले की चाकसू तहसील के त्रिलोकपुरा गांव में हुआ। इस एनिकट का निर्माण सिकोईडिकोन द्वारा जन समुदाय के सहयोग से किया गया।

लदाना एनिकट

लदाना एनिकट का निर्माण जयपुर जिले की फागी तहसील के लदाना गांव में हुआ। इस एनिकट का निर्माण सिकोईडिकोन द्वारा इंटिग्रेटेड वाटर रिसॉर्सेज डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत जन सहयोग से किया गया। इस एनीकट से आसपास के 6 गाँव लाभान्वित हो रहे हैं।

CECOEDECON

Centre for Community Economics and Development Consultants Society (CECOEDECON) is a development organization in Rajasthan. Over the last four decades it has evolved into a mature and vibrant civil society organization by adopting effective strategies for integrated participatory development and advocating for the rights of the partner communities with an informed perspective of micro-macro dynamics. For the past 40 years, CECOEDECON has been supporting the people to develop their natural resources through efforts including soil and water conservation, water harvesting, ecological regeneration, watershed development, etc. The interventions have focused on the promotion of comprehensive sustainable water use practices, helping the organization to build a community-led movement to conserve water at the grassroots level.

The actions under the Natural Resource Management program of CECOEDECON have helped in the creation and maintenance of water harvesting structures and changing social behaviors for the Conservation of natural resources, specifically water. In order to enhance resilience, dryland farming and measures for water and soil conservation have been promoted by the organization in over 500 villages of Rajasthan. This is supported by utilizing traditional knowledge of the local communities and their collective strength in conjunction with the transfer of complementary technologies at the grassroots. The organization has also constructed and revived over 250 traditional water storage structures including anicuts, ponds, Nadis, tanka, earthen dam etc., having great relevance for minimizing the effect of drought on small and marginal farmers and the rural communities at large.

cecoedecon

Centre for Community Economics and Development Consultants Society

SWARAJ, F-159-160, Industrial & Institutional Area, Sitapura, JAIPUR-22 INDIA

Tel.: 91-141-2771488/2771855, Fax: 91-141-2770330, E-mail: cecoedecon@gmail.com

visit us at http.www.cecoedecon.org.in